

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 8: राजा सगर

20 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



अपने पिता के यज्ञीय अश्व की खोज में समस्त पृथ्वी खोद डालने के पश्चात्, सगर के साठ हज़ार पुत्र उसे ध्यानस्थ ऋषि कपिल के निकट चरते हुए पाते हैं — और भगवान् को चोर समझकर उठे हुए अस्त्रों के साथ उन पर टूट पड़ते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह आठवाँ अध्याय सम्राट् सगर की प्रसिद्ध कथा कहता है — एक ऐसा राजा जो विष के साथ उत्पन्न हुआ फिर भी महानता के लिए नियत था, जिसका नाम स्वयं समुद्र धारण करेगा। शुकदेव राजा परीक्षित के लिए वर्णन करते हैं कि किस प्रकार सगर के साठ हज़ार अभिमानी पुत्र, खोए

हुए यज्ञीय अश्व की खोज में पृथ्वी खोदते हुए, दिव्य ऋषि कपिल का अपराध कर बैठे और एक क्षण में भस्म हो गए। किन्तु अध्याय सावधानीपूर्वक यह सिखाता है कि उन्हें ऋषि के क्रोध ने नहीं जलाया, क्योंकि भगवान् कपिल समस्त क्रोध से परे हैं; उन्हें उनका अपना अपराध ही ले डूबा। यह राजकुमार अंशुमान की विनम्र प्रार्थना के साथ, जो अश्व को पुनः प्राप्त करता है, और सगर के स्वयं सब कुछ त्यागकर परम गति पाने के साथ समाप्त होता है। यह अध्याय अभिमान और विनम्रता के विषय में है, और उस भगवान् के विषय में जो स्वयं शुद्ध सत्त्व हैं।

अध्याय-परिचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 8 (अष्टम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: सगर के पुत्र और ऋषि कपिल
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: सूर्यवंश का राज्य; अश्व की खोज में खोदी गई पृथ्वी; ऋषि कपिल का आश्रम
- केन्द्रीय विषय: सम्राट् सगर का जन्म एवं शासन, ऋषि कपिल का अपराध करने पर उनके साठ हजार पुत्रों का विनाश, राजकुमार अंशुमान द्वारा यज्ञीय अश्व की पुनर्प्राप्ति, और सगर का अन्तिम मोक्ष
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 1-31
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

सगर का जन्म

शुकदेव ने वंश आगे बढ़ाया: रोहित से हरित, और हरित से चम्प, जिसने चम्पा नगरी बसाई; फिर सुदेव, विजय, भरुक, वृक और बाहुक। जब बाहुक का राज्य उसके शत्रुओं ने छीन लिया, वह अपनी पत्नी सहित वन को चला गया। जब वृद्ध राजा वहाँ देहत्याग कर गया, तब उसकी रानी उसके साथ चिता पर जाने को तत्पर हुई, किन्तु ऋषि और्व ने, यह जानकर कि वह गर्भवती है, उसे रोक दिया।

वृद्धं तं पञ्चतां प्राप्तं महिष्यनुमरिष्यती ।

और्वेण जानतात्मानं प्रजावन्तं निवारिता ॥ ३ ॥

vṛddhaṁ taṁ pañcatāṁ prāptaṁ mahiṣy anumariṣyati aurveṇa jānatātmānaṁ prajāvantaṁ nivāritā

अर्थ: जब वृद्ध राजा देहत्याग कर गया और रानी उसके साथ मरने को तत्पर हुई, तब ऋषि और्व ने उसे रोक दिया, जो जानते थे कि वह गर्भवती है। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 3)

उसकी ईर्ष्यालु सौतों, उसके गर्भवती होने की बात जानकर, उसके भोजन में विष मिला देती हैं; किन्तु उसका कोई अनिष्ट नहीं हुआ। इसके बजाय उसी विष के साथ एक यशस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ, और इसी कारण उसका नाम सगर रखा गया — “विष के साथ उत्पन्न हुआ।” वह एक महान् चक्रवर्ती सम्राट् बना, और उसी के पुत्र एक दिन विशाल समुद्र को खोदेंगे, जिसने उसका नाम धारण किया।

आज्ञायास्यै सपत्नीभिर्गरो दत्तोऽन्धसा सह ।

सह तेनैव सञ्जातः सगराख्यो महायशाः ।

सगरश्चक्रवर्त्यासीत् सागरो यत्सुतैः कृतः ॥ ४ ॥

*ājñāyāsyai sapatnībhir garo datto 'ndhasā saha saha tenaiva sañjātaḥ sagarākhyo mahā-yaśāḥ
sagarāś cakravarty āsīt sāgaro yat-sutaiḥ kṛtaḥ*

अर्थ: उसकी सौतों ने, उसकी अवस्था जानकर, उसके भोजन में विष दे दिया; किन्तु उसी विष के साथ एक अत्यन्त यशस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ और इसीलिए उसका नाम सगर रखा गया। वह चक्रवर्ती सम्राट् बना, और उसी के पुत्रों द्वारा समुद्र (सागर) खोदा गया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 4)



विधवा, गर्भवती रानी को ऋषि और मृदुता से उसके पति की चिता पर चढ़ने से रोक देते हैं; यद्यपि उसकी ईर्ष्यालु सौतों उसके भोजन में विष मिला देती हैं, वह एक यशस्वी पुत्र सगर को जन्म देती है — “विष के साथ उत्पन्न हुआ” (श्लोक 3-4)।

विजय और यज्ञ

अपने गुरु और के परामर्श से, सगर ने तालजंघों, यवनों, शकों, हैहयों और बर्बरों को जीता किन्तु मारा नहीं; इसके बजाय उसने उन्हें विभिन्न रूप से विरूपित करके जीवित छोड़ दिया। तब, और द्वारा दर्शाए मार्ग का अनुसरण करते हुए, उसने अनेक अश्वमेध यज्ञों द्वारा भगवान् श्री हरि की — जो सबके आत्मा हैं, समस्त वेदों एवं देवताओं के रूप में प्रकट हैं — आराधना की। किन्तु जब यज्ञ से पूर्व अभिमन्त्रित अश्व स्वच्छन्द विचर रहा था, तब स्वर्ग के स्वामी इन्द्र ने उसे चुरा लिया।

सोऽश्वमेधैरयजत सर्ववेदसुरात्मकम् ।
और्वोपदिष्टयोगेन हरिमात्मानमीश्वरम् ।
तस्योत्सृष्टं पशुं यज्ञे जहाराश्वं पुरन्दरः ॥ ७ ॥

*so 'śvamedhair ayajata sarva-veda-surātmakam aurvopadiṣṭa-yogena harim ātmānam īśvaram
tasyotsṛṣṭam paśuṁ yajñe jahārāśvaṁ purandarah*

अर्थ: और्व द्वारा दर्शाई विधि से सगर ने अश्वमेध यज्ञों द्वारा भगवान् हरि की आराधना की, जो आत्मा एवं ईश्वर हैं, जो समस्त वेद एवं देवता हैं; किन्तु इन्द्र (पुरन्दर) ने उसके यज्ञ हेतु छोड़े गए अश्व को चुरा लिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 7-8)



ऋषि और्व द्वारा निर्देशित, सम्राट् सगर महान् अश्वमेध यज्ञ द्वारा भगवान् हरि की आराधना करते हैं — किन्तु स्वर्ग के स्वामी इन्द्र गुप्त रूप से अभिमन्त्रित अश्व को उठा ले जाते हैं, जिससे राजा के पुत्रों की नियति आरम्भ होती है (श्लोक 7-8)।

साठ हज़ार पुत्र और ऋषि कपिल

अपने पिता द्वारा अश्व खोजने का आदेश पाकर, सगर की रानी सुमति के साठ हज़ार अभिमानी पुत्रों ने अपनी खोज में चारों ओर पृथ्वी खोद डाली।

सुमत्यास्तनया दृप्ताः पितुरादेशकारिणः ।
हयमन्वेषमाणास्ते समन्तान्यखनन् महीम् ॥ ८ ॥

*sumatyās tanayā dṛptāḥ pitur ādeśa-kāriṇaḥ hayam anveṣamāṇās te samantān nyakhanan
mahīm*

अर्थ: सुमति के अभिमानी पुत्रों ने, अपने पिता का आदेश पालन करते हुए, अश्व की खोज में चारों ओर पृथ्वी खोद डाली। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 9)

उत्तर-पूर्व दिशा में खोदते हुए, उन्होंने अन्ततः अश्व को दिव्य ऋषि कपिल के निकट चरते हुए पाया, जो नेत्र मूँदे ध्यान में बैठे थे। भगवान् को चोर समझकर, वे अस्त्र उठाए हुए उन पर टूट पड़े, यह चिल्लाते हुए, “यह रहा वह दुष्ट जिसने अश्व चुराया — इसे मार डालो!” उसी क्षण ऋषि ने अपने नेत्र खोले। इन्द्र द्वारा पहले ही उनका विवेक हर लिया गया था, और इतनी उच्च आत्मा के प्रति किए गए घोर अपराध से नष्ट होकर, सगर के पुत्र एक क्षण में भस्म हो गए — ऋषि द्वारा नहीं, अपितु अपने ही शरीर की अग्नि से जले।

स्वशरीराग्निना तावन्महेन्द्रहृतचेतसः ।

महद्व्यतिक्रमहता भस्मसादभवन् क्षणात् ॥ ११ ॥

sva-śarīrāgninā tāvan mahendra-hṛta-cetasaḥ mahad-vyatikrama-hatā bhasmasād abhavan kṣaṇāt

अर्थ: महेन्द्र द्वारा उनका विवेक हर लिए जाने पर, और अपने महान् अपराध से नष्ट होकर, वे एक क्षण में अपने ही शरीर की अग्नि से भस्म हो गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 12)



ज्योंही दिव्य ऋषि कपिल अपने नेत्र खोलते हैं, सगर के साठ हज़ार पुत्र — जिनका विवेक पहले ही हर लिया गया था और जो अपने घोर अपराध से नष्ट हो चुके थे — अपने ही शरीर की अग्नि से भस्म हो जाते हैं (श्लोक 12)।

शुकदेव ने किसी भी भ्रान्त धारणा का सावधानीपूर्वक निवारण किया: यह कहना उचित नहीं कि सगर के पुत्र ऋषि के क्रोध से जले। भगवान् कपिल में क्रोध का अन्धकार भला कैसे कल्पित किया जा सकता है, जो शुद्ध सत्त्व के धाम हैं, जिनका स्वरूप समस्त ब्रह्माण्ड को पवित्र करता है, और जिन्होंने इस संसार में सांख्य-ज्ञान का वह तारक जहाज़ उतारा जिसके द्वारा साधक सांसारिक अस्तित्व के सागर को पार करते हैं? उनमें क्रोध की कल्पना करना उतना ही असंगत है जितना यह कल्पना करना कि पृथ्वी की धूल अछूते आकाश में चिपक सकती है।

यहाँ भागवत अभिमान के विरुद्ध एक साधारण चेतावनी से भी अधिक गम्भीर शिक्षा देता है। किसी महान् आत्मा के प्रति किया गया अपराध — महद्व्यतिक्रम — कोई ऋण नहीं जिसे अपराधी से वह आत्मा स्वयं वसूल करे, क्योंकि कपिल जैसी शुद्ध आत्मा में किसी को हानि पहुँचाने की इच्छा ही नहीं होती; अपराध स्वयं ही प्रज्वलित हो उठता है और अपराधी को भीतर से भस्म कर डालता है, इसके लिए ऋषि के किसी शाप की आवश्यकता नहीं (श्लोक 11-12)। यही कारण है कि आगे चलकर, जब अश्व मिल जाता है, तब कपिल कहते हैं कि पुत्रों को उनके किए से केवल पवित्र गंगा ही मुक्त कर सकती है, अन्य कुछ नहीं (श्लोक 28-29): शुद्ध आत्मा के अपमान का घाव धन, कर्मकाण्ड अथवा साधारण प्रायश्चित्त से नहीं भरता, अपितु केवल दुर्लभतम एवं सर्वोच्च पवित्र करने वाली कृपा से ही भरता है। जो किसी का बुरा नहीं चाहता, उसके प्रति अपराध इसीलिए हल्का नहीं, अपितु और भी गुरुतर होता है — उसका दण्ड तत्काल प्रभावी हो जाता है, और उसे केवल उच्चतम कोटि की पवित्रता ही दूर कर सकती है।

अंशुमान की प्रार्थना

सगर का एक अन्य पुत्र असमञ्जस था, जो उनकी पत्नी केशिनी से उत्पन्न हुआ। पूर्व-जन्म का एक योगी जो कुसंगति से पतित हुआ था, असमञ्जस इतना उद्दण्ड आचरण करता था कि उसके पिता ने उसे निर्वासित कर दिया — यद्यपि उसने बाद में उन बालकों को पुनर्जीवित करके अपनी छिपी शक्ति प्रकट कर दी जिन्हें वह डुबोता प्रतीत हुआ था। उसका पुत्र अंशुमान था, जो अपने पितामह के प्रति समर्पित था। सगर के आदेश से, अंशुमान अपने चाचाओं द्वारा खोदे मार्ग का अनुसरण करते हुए भस्म के ढेरों के निकट अश्व को पा गया, और वहाँ ऋषि कपिल के रूप में भगवान् विष्णु के दर्शन किए। हाथ जोड़े और एकाग्र मन से, उसने एक सुन्दर प्रार्थना अर्पित की।

अंशुमानुवाच

न पश्यति त्वां परमात्मनोऽज्जनो

न बुध्यतेऽद्यापि समाधियुक्तिभिः ।

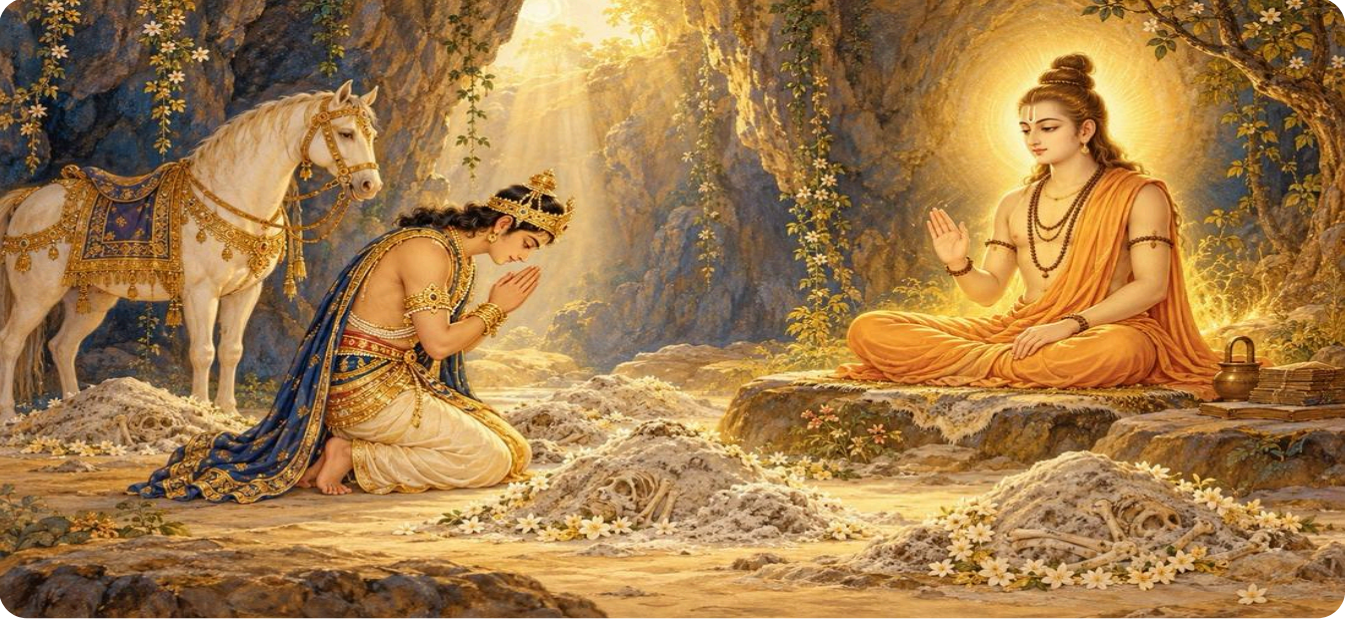
कुतोऽपरे तस्य मनःशरीरधी-

विसर्गसृष्टा वयमप्रकाशाः ॥ २१ ॥

aṁśumān uvāca na paśyati tvāṁ param ātmano 'jano na budhyate 'dyāpi samādhī-yuktibhiḥ kuto 'pare tasya manaḥ-śarīra-dhī- visarga-sṛṣṭā vayam aprakāśāḥ

अर्थ: अंशुमान ने कहा: अजन्मा ब्रह्मा भी आज तक समाधि या तर्क द्वारा आपको, जो उनसे भी परे हैं, नहीं देख पाते; तब उनके मन, शरीर एवं बुद्धि से उत्पन्न अन्य प्राणी — और सबसे कम हम, जो ज्ञान के प्रकाश से रहित हैं — आपको कैसे जान सकते हैं? (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 21)

अंशुमान ने आगे कहा कि भगवान् प्रत्येक जीव के हृदय में निवास करते हैं, किन्तु जीव, जिसकी दृष्टि प्रकृति के तीन गुणों से आवृत है, केवल प्रकृति की क्रियाओं को देखता है और अपने इतने निकट बैठे भगवान् को कभी नहीं देख पाता (श्लोक 22)। जो ऋषि इन गुणों से ऊपर उठ चुके हैं — जैसे चारों कुमार — वे ही भगवान् को अपने चिन्तन में धारण कर सकते हैं, उसने कहा, किन्तु स्वयं उसके जैसा बद्ध जीव भला यह कैसे कर सकता है (श्लोक 23)? उसने भगवान् के दिव्य नाम एवं स्वरूप की स्तुति की, जो प्रकृति से सर्वथा अछूते हैं यद्यपि संसार को शिक्षा देने हेतु, जैसे भगवद्गीता में, ग्रहण किए गए, और यह स्वीकार किया कि काम, लोभ एवं ईर्ष्या से मोहित जीव घर-परिवार से चिपके रहते हैं, जबकि वह स्वयं, भगवान् के मात्र दर्शन से ही, ऐसी समस्त कामनाओं से मुक्त हो चुका था (श्लोक 24-26)।



राजकुमार अंशुमान, अपने पूर्वजों की भस्म के निकट अश्व और दिव्य ऋषि कपिल को पाकर, हाथ जोड़े प्रणाम करता है और विनम्र एवं एकाग्र मन से भगवान् की स्तुति करता है (श्लोक 21-27)।

अश्व की पुनर्प्राप्ति और राजा का मोक्ष

राजकुमार की विनम्र स्तुति से प्रसन्न होकर, भगवान् कपिल ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, “हे वत्स, इस अश्व को ले जाओ, क्योंकि यह तुम्हारे पितामह का यज्ञीय पशु है। और यहाँ भस्म पड़े तुम्हारे ये पूर्वज तो पवित्र गंगा-जल के अतिरिक्त किसी अन्य उपाय से उद्धार नहीं पा सकते।”

श्रीभगवानुवाच

अश्वोऽयं नीयतां वत्स पितामहपशुस्तव ।

इमे च पितरो दग्धा गङ्गाम्भोऽर्हन्ति नेतरत् ॥ २८ ॥

śrī-bhagavān uvāca aśvo 'yam nīyatām vatsa pitāmaha-paśus tava ime ca pitaro dagdhā gaṅgāmbho 'rhanti netarat

अर्थ: भगवान् ने कहा: हे वत्स, इस अश्व को ले जाओ; यह तुम्हारे पितामह का यज्ञीय पशु है। और तुम्हारे ये पूर्वज, जो जले पड़े हैं, केवल गंगा के जल से ही उद्धरित हो सकते हैं, अन्य किसी से नहीं। (नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 29)

भगवान् की परिक्रमा करके और प्रणाम करके, अंशुमान अश्व को वापस ले आया, और उसी से सम्राट् सगर ने बहुत दिनों से अधूरे रह गए यज्ञ को पूर्ण किया। तब सगर ने राज्य अंशुमान को सौंप दिया और स्वयं समस्त कामना से मुक्त तथा प्रत्येक बन्धन से छूटकर, अपने गुरु और के उपदिष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए, सर्वोच्च लक्ष्य को पा लिया।

राज्यमंशुमते न्यस्य निःस्पृहो मुक्तबन्धनः ।
और्वोपदिष्टमार्गेण लेभे गतिमनुत्तमाम् ॥ ३० ॥

rājyam aṁśumate nyasya niḥspṛho mukta-bandhanaḥ aurvopadiṣṭa-mārgeṇa lebhe gatim anuttamām

अर्थ: राज्य अंशुमान को सौंपकर, सगर — कामना से मुक्त और बन्धन से छूटकर — ऋषि और्व द्वारा दर्शाए मार्ग से परम गति को प्राप्त हुए।
(नवम स्कन्ध, अध्याय 8, श्लोक 31)



भगवान् कपिल से आशीर्वाद पाकर, राजकुमार अंशुमान श्रद्धापूर्वक पुनः प्राप्त यज्ञीय अश्व को वापस ले आता है, जिससे उसके पितामह सगर महान् यज्ञ को पूर्ण कर पाते हैं और अन्ततः परम गति प्राप्त करते हैं (श्लोक 29-31)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् विष में से भी कल्याण उत्पन्न करते हैं। सगर उसी विष के साथ उत्पन्न होते हैं जो उन्हें नष्ट करने के लिए था, फिर भी एक यशस्वी सम्राट् बनते हैं — इसका संकेत कि कोई विपत्ति भगवान् द्वारा नियत नियति को रोक नहीं सकती (श्लोक 3-4)।
2. अभिमान बलवानों को भी अन्धा कर देता है। सगर के साठ हजार पुत्र इतने शक्तिशाली हैं कि पृथ्वी खोद डालते हैं, फिर भी उनका अभिमान और उतावलापन उन्हें एक सन्त का अपमान करने और विनाश की ओर ले जाता है (श्लोक 11-12)।
3. भगवान् शुद्ध सत्त्व हैं, क्रोध से परे। शुकदेव आग्रहपूर्वक कहते हैं कि कपिल ने पुत्रों को क्रोध में नहीं जलाया; दोष और अग्नि दोनों उन्हीं के थे। सर्वशुद्ध भगवान् में क्रोध का आरोप उतना ही असंगत है जितना खुले आकाश में धूल के चिपकने की कल्पना (श्लोक 12-14)।

4. विनम्रता वह खोलती है जो अभिमान नष्ट करता है। जहाँ अभिमानी पुत्रों को तत्काल विनाश मिला, वहाँ विनम्र अंशुमान को उसी स्थान पर, उसी स्वरूप के समक्ष कृपा मिलती है। उसकी प्रार्थना यह सिखाती है कि कोई भी देहधारी — न अजन्मा ब्रह्मा, न प्रकृति के गुणों से मुक्त चारों कुमार, न मन-शरीर में बद्ध कोई भी जीव — चतुराई या प्रयास से भगवान् को नहीं पा सकता; केवल समर्पण ही ज्ञान का नेत्र खोलता है, क्योंकि प्रत्येक हृदय में विराजमान भगवान् हमसे केवल हमारे अपने काम, लोभ एवं मोह के कारण छिपे हैं। अंशुमान स्वयं को सिद्ध करने नहीं, अपितु अपनी अज्ञानता स्वीकार करने आता है, इसीलिए उसे कपिल का आशीर्वाद, अश्व की पुनर्प्राप्ति, और यह वचन मिलता है कि गंगा ही अभिमान द्वारा भस्म किए गए को उद्धार दे सकती है (श्लोक 21-29)।

5. सच्चा राजत्व संन्यास में समाप्त होता है। अपना कर्तव्य पूर्ण करके, सगर राज्य और कामना दोनों को त्यागकर परम गति प्राप्त करते हैं — एक सुजीवित एवं भलीभाँति समर्पित जीवन का आदर्श (श्लोक 30-31)।

एक श्रद्धापूर्ण चिन्तन

यह अध्याय दिव्य के निकट पहुँचने के दो मार्गों को साथ-साथ रखता है। सगर के साठ हजार पुत्र ऋषि कपिल के पास अस्त्र लिए और चिल्लाते हुए आते हैं, अपने ही धार्मिकता के प्रति आश्चर्य, वहाँ केवल एक चोर देखते हुए जहाँ स्वयं भगवान् ध्यान में बैठे थे — और उनका अभिमान उन्हें एक ही क्षण में भस्म कर देता है। उनका भतीजा अंशुमान उसी स्थान पर आता है, उसी ऋषि को देखता है, किन्तु हाथ जोड़े और विनम्र हृदय से प्रणाम करता है, यह स्वीकार करते हुए कि ब्रह्मा भी भगवान् को नहीं समझ सकते — और उसे आशीर्वाद, अश्व, और अपने पूर्वजों के उद्धार का वचन मिलता है। अन्तर बल या वंश का नहीं है; दोनों एक ही महान् कुल के हैं। अन्तर विनम्रता का है। भागवत मृदुता से हमें स्मरण कराता है कि हम प्रतिदिन भगवान् के निकट पहुँचते हैं, और कैसे पहुँचते हैं — यह महत्त्व रखता है: अभिमानी, चाहे कितने ही शक्तिशाली हों, अपनी ही अग्नि से नष्ट हो जाते हैं, जबकि विनम्र, चाहे कितने ही छोटे हों, ऊपर उठा लिए जाते हैं। और शुकदेव के इस कोमल आग्रह में कि कपिल ने रस्ती भर भी क्रोध नहीं किया, हमें वह सत्य दिखाता है कि भगवान् कभी हमारे शत्रु नहीं — स्वयं शुद्ध सत्त्व, वे केवल एक झुके हुए मस्तक और एक सच्चे हृदय की प्रतीक्षा करते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, राजकुमार अंशुमान की भावना में, भगवान् के समक्ष विनम्रता का अभ्यास करें। एक ऐसा क्षण चुनें जब आप सामान्यतः स्वयं को आगे रखते — एक विवाद जो आप जीत सकते थे, एक सुधार जो आप कर सकते थे, एक श्रेय जिसका आप दावा कर सकते थे — और इसके बजाय मृदुता से पीछे हट जाएँ, उस छोटे समर्पण को भगवान् को अर्पित करते हुए, इस प्रार्थना के साथ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” स्मरण रखें कि वही दिव्य उपस्थिति प्रत्येक आत्मा में निवास करती है जिससे आप मिलते हैं, जैसे कपिल भस्म के बीच अनदेखे बैठे थे; प्रत्येक व्यक्ति के साथ वह श्रद्धा रखें जो आप एक सन्त को देते। एक झुका मस्तक और एक कोमल वचन आज आपकी पूजा बनें, इस विश्वास के साथ कि वह भगवान् जो शुद्ध सत्त्व हैं, विनम्र के निकट आते हैं।

उपसंहार

नवम स्कन्ध का आठवाँ अध्याय बताता है कि किस प्रकार सम्राट् सगर, विष के साथ उत्पन्न होकर भी महानता तक उठे, ने अपना नाम समुद्र को और शास्त्र की सबसे गम्भीर शिक्षाओं में से एक को दिया। उनके साठ हजार पुत्र, अभिमानपूर्ण उतावली में पृथ्वी खोदते हुए, दिव्य ऋषि कपिल का अपमान कर बैठे और अपने ही अपराध की अग्नि से भस्म हो गए — यद्यपि भागवत यह सिखाने में सावधान है कि सर्वशुद्ध भगवान् ने रस्ती

भर भी क्रोध नहीं किया। जहाँ उनके अभिमान ने विनाश दिया, वहाँ राजकुमार अंशुमान की विनम्रता ने कृपा दी: उसकी प्रार्थना ने यज्ञीय अश्व पुनः प्राप्त किया और यह वचन जिताया कि पवित्र गंगा एक दिन उसके पूर्वजों का उद्धार करेगी। और सगर स्वयं, अपना कर्तव्य पूर्ण करके, सब त्यागकर परम गति को प्राप्त हुए। यह अध्याय हमें एक ऐसा सत्य देता है जो जितना कोमल है उतना ही गम्भीर — कि उस भगवान् के समक्ष जो स्वयं सत्त्व हैं, हमें हमारा बल नहीं, अपितु हमारी विनम्रता ही बचाती है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), नवम स्कन्ध, अष्टम अध्याय, पृष्ठ 31–34।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बद्धता या उसके अनुमोदन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-8-king-sagara-sixty-thousand-sons-and-kapila-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट